International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(I), October - December, 2022, pp. 199-202

सुशासन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डॉ. राज्यश्री तिवारी*

प्रस्तावना

एक सुशासन की खोज अंतहीन प्रक्रिया है। राज्य के जन्म से ही शासकों के लिए सुशासन की स्थापना एक आंतरिक चुनौती रही है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में सुशासन की स्थापना की दिशा में निरंतर प्रयास होते रहे हैं और आज भी हो रहे हैं। इस दिशा में हमारे संविधान की प्रस्तावना मार्गदर्शक है। 25 दिसंबर 2014 को भारत सरकार के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के 90वें जन्मदिन को सुशासन दिवस के रूप में मनाया गया और आधिकारिक तौर पर हर वर्ष इस दिन को सुशासन दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई। इस अवसर पर जनता के लिए कई तरह की योजनाएं शुरू की गई।सुशासन एक गतिशील अवधारणा है जो हर युग के लिए आवश्यक है इसमें तीवृगति से राजनीतिक, सामाजिक, और आर्थिक परिवर्तन का समावेश देखने को मिलता है। साथ में अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण और शासन को सफलतापूर्वक संचालित करने की शर्तें भी शामिल होती है अतः बदलते हुए परिवेश में आवधिक पुनर्विचार तथा शासन करने वाले संस्थानों की अवधारणा में परिवर्तन और पुन प्रतिरूपण करने की आवश्यकता है। इस प्रकार सुशासन की खोज की दिशा में निरंतर प्रयास होते रहने चाहिए।

अवधारणा

साधारण शब्दों में सुशासन का आशय समस्त जनता के हित के लिए कार्य करना है अर्थात किसी सामाजिक राजनीतिक इकाई को इस प्रकार चलाना कि वह वांछित परिणाम दे। शासन शब्द में'' सु ''उपसर्ग लग जाने से सुशासन शब्द का जन्म होता है। पनंदीकेर के अनुसार, सद शासन का आशय उस राष्ट्र राज्य से है जो जनता को शांति पूर्ण व्यवस्थित समृद्धि उचित सहभागिता पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए निर्देशित करता है। मिनोचा के शब्दों में सुशासन वह है जहां राजनीतिक उत्तरदायित्व, स्वतंत्रता की उपलब्धि, कानून पालक, नौकरशाही उत्तरदायित्व, सूचना में पारदर्शिता, जो प्रभावी एवं कुशल और सरकार तथा समाज में सहयोग हो।

इस प्रकार शासन की परिभाषा कभी लक्ष्य के रूप में कभी साधन के रूप में और कभी पूर्ण से लोकतांत्रिक निर्धारित उद्देश्य के रूप में की जाती है स्मरणीय है कि समय के अनुसार सब शासन की परिभाषा में विस्तार होता आया है। वर्ष 1992 में शासन और विकास नामक रिपोर्ट में विश्व बैंक ने सुशासन अर्थात गुड गवर्नेंस की परिभाषा दें कि उसने सुशासन को विकास के लिए देश के आर्थिक एवं सामाजिक संसाधनों के प्रबंधन में शक्ति का प्रयोग करने के तरीके के रूप में परिभाषित किया।

सुशासन के उद्देश्य

- प्रशासन की पारदर्शिता और उत्तरदायित्व के लिए सरकार को प्रतिबद्ध करना ताकि लोगों को इसकी जानकारी प्राप्त हो सके।
- जनता की दशा में सुधार करने हेतु।
- देश में अच्छे व प्रभावी नियमों को लागू करने हेतु।
- प्रशासन में पारदर्शिता हेतु।

* व्याख्याता, एस. एस.जी. पारीक पी.जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

सुशासन की महत्व

वास्तव में सुशासन की अवधारणा का विकास कौटिल्य अरस्तु और प्लेटो के दर्शनशास्त्र में देखा जा सकता है। राम राज्य के रूप में सुशासन की अवधारणा प्राचीन काल से ही विकसित है परंतु आधुनिक लोक प्रशासन की दृष्टि में यह शब्द 1990 के दशक में प्रविष्ट हुआ। विश्व बैंक के एक दस्तावेज में शासन शब्द का प्रयोग एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में किया जिससे शासन शक्ति का प्रयोग राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक संसाधनों का प्रबंध करने के लिए किया जाता है। अतः सुशासन के बिना विकास संभव नहीं है इसका महत्व इस प्रकार हैः—

- आर्थिक विकास
- सामाजिक विकास
- राजनीतिक विकास

आर्थिक विकास

आर्थिक विकास के सभी तत्व जैसे उत्पादन ,वितरण, निवेश, यहां तक कि उपभोग भी विभिन्न बाधाओं का सामना करते हैं यदि सुशासन स्थापित हो जाता है तो इन बाधाओं को दूर करते हुए संसाधनों का उचित वितरण संभव होगा।

सामाजिक विकास

सामाजिक विकास हेतु सुशासन आवश्यक है। समाज में हर वर्ग के लोगों को निष्पक्षता का आधार मिले। समाज में विभिन्न धर्मो वर्गों जातियों के लोग निवास करते हैं इनमें समानता का होना आवश्यक है।

राजनीतिक विकास

यदि किसी देश का प्रशासन सुशासन स्थापित करने में सक्रिय नहीं होता है प्रशासन की सफलता राजनीतिक नेतृत्व की इमानदारी और राजनीतिक प्रतिष्ठानों के नियम और वीनियमों पर निर्भर करती है

राजनीतिक संस्थाओं और राजनीतिक दलों के बीच में रचनात्मक सहयोग और लोगों के कल्याण के लिए कार्यक्रमों का निर्माण आपस में अच्छी प्रतिस्पर्धा और सुशासन स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सुशासन की विशेषता

- **भागीदारीः** शासन प्रक्रिया में नागरिकों की भागीदारी सुशासन की महत्वपूर्ण विशेषता है। राजनीतिक अधिकारों के लक्ष्य और उद्देश्य समाज में लोगों की अधिक से अधिक भागीदारी पर निर्भर करते हैं कानूनी ढांचा कानून के शासन का प्रतिनिधित्व करता है। जो शासन की निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिला हो या पुरुष, या जातिगत समानता सभी की भागीदारी के मामले में निष्पक्षता सुनिश्चित करता है।
- **कानून का शासनः** कानून का शासन स्थापित करने के लिए समाज में निष्पक्ष कानूनी ढांचे का होना आवश्यक है। कानून का शासन निष्पक्षता को सुनिश्चित करता है जिससे मानव अधिकारों की रक्षा होती है स्वतंत्र न्यायपालिका प्रणाली, निष्पक्ष और ईमानदार पुलिस बल शासन को सुनिश्चित करने के प्रमुख तत्व है।
- **पारदर्शिताः** सेवाओं के उचित वितरण के लिए शासन में पारदर्शिता का होना अति आवश्यक। उचित नियमों और वि नियमो का पालन करते हुए नीतियों के निर्माण और उसके प्रवर्तन के बीच संतुलन सुनिश्चित करता है। यह नागरिकों को स्वतंत्र रूप से नीतियों के निर्माण और उसके कार्यान्वयन की मीडिया के माध्यम से पारदर्शी रूप में सूचनाएं उपलब्ध करवाता है।
- **प्रतिक्रियाशीलः** सुशासन के तहत एक समय सीमा के भीतर रहकर सभी संस्थाएं सभी साझेदारों को सेवाएं प्रदान करने का प्रयास करें जो कि सफल प्रशासन की आवश्यकता है।

- **आम सहमति उन्मुखः** शासन को सफल बनाने के लिए आम सहमति का होना आवश्यक है इसके द्वारा समाज के विकास का दीर्घकालीन परिप्रेक्ष्य प्राप्त करने में मदद मिलती है। अलग–अलग हितों के बीच मध्य मार्गो को अपनाते हुए सुशासन स्थापित करना जिससे व्यापक सहमति कायम हो।
- **इक्विटी और समावेशितः** समाज में रहने वाले सभी व्यक्तियों को समान अधिकार प्राप्त है जिससे वे अपना सुविधाजनक जीवन व्यतीत कर सके। अतः सुशासन स्थापित करने के लिए एक समान न्याय व्यवस्था होना आवश्यक है।
- **प्रभावशीलता और दक्षताः** सतत विकास की स्थापना के लिए समाज के संसाधनों का उचित उपयोग, प्राकृतिक संसाधनों का सतत प्रयोग व पर्यावरण का संरक्षण सुशासन की कुंजी है।
- **जवाबदेहीः** सुशासन इस बात पर निर्भर करता है कि सरकार ,निजी क्षेत्र, और नागरिक समाज संगठन अपने लोगों और संस्थागत हित धारकों के प्रति कितने जवाबदेही है। पारदर्शिता और कानून के शासन के बिना जवाबदेहीता संभव नहीं है।

भारत में सुशासन की स्थापना के लिए प्रयास

- सूचना का अधिकार
- ई गवर्नेंस
- कानूनी सुधार
- विकेंद्रीकरण
- पुलिस सुधार
- आकांक्षी जिला कार्यक्रम
- सुशासन सूचकांक इत्यादि।

सुशासन की चुनौतियां

- **राजनीति का अपराधीकरणः** राजनीति का अपराधीकरण तथा राजनेताओं, सिविल सेवकों एवं व्यापारिक घरानों का गठजोड़ सार्वजनिक नीति निर्माण एवं शासन पर बुरा प्रभाव डालते हैं।
- **भ्रष्टाचारः** सुशासन की राह में भ्रष्टाचार भी महत्वपूर्ण चुनौती है।
- **उत्तरदायित्व का अभावः** शासन में अक्षमता के लिए उद्धत एक सामान्य कारण प्रणाली के भीतर सिविल सेवाओं को उनके कार्यों के लिए उत्तरदाई ठहराने की अक्षमता है अनुशासनात्मक कार्यवाही यों के प्रति उदासीनता ने इस की कार्य क्षमता को प्रभावित किया है।
- **नागरिकों का अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता का अभावः** नागरिकों का अधिकारों के प्रति अपर्याप्त जागरूक होना सरकारी कर्मचारी को जवाब दे बनाने में बाधा उत्पन्न करता है उसी प्रकार नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करते तो उससे दूसरों के अधिकार और कर्तव्य में बाधा उत्पन्न होती है अतः एक सतर्क नागरिक और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता सुशासन की स्थापना का महत्वपूर्ण अंग है।
- **कानूनों नियमों का अप्रभावी क्रियान्वयनः** किसी भी देश में कानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन से उस देश का संपूर्ण विकास निर्भर करता है अतः कमजोर क्रियान्वयन सुशासन की राह में बाधा उत्पन्न करता है जिससे देश का विकास प्रभावित होता है।
- **लालफीताशाहीः** सरकारी कर्मचारी नियमों व प्रक्रियाओं में अत्यधिक व्यस्त रहते हैं और इसे अपने आप में एक लक्ष्य के रूप में देखने लगते हैं जो सरकार के साथ आम नागरिक के संपर्क को बोझिल और कठिन बनाता है यही भ्रष्टाचार का मूल कारण भी बनता है।

सुझाव

इस प्रकार की पृष्ठभूमि में हमें सुशासन की स्थापना के लिए उपचार के माध्यम से प्रयास करने की आवश्यकता है

- निर्वाचित संस्थाओं में अपराधिक तत्वों के प्रवेश पर प्रतिबंध
- नैतिक शिक्षा पर जोर
- जन सहभागिता
- राजनीतिज्ञ और दलों को अनुशासित करना
- सद शासन के सिद्धांतों को शिक्षा द्वारा नागरिकों पर लागू करना।
- राजनीति का अपराधीकरण रोकना
- कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन

सुशासन की स्थापना कुशल ईमानदार नैतिक आचरण करने वाले उत्तरदाई लोक सेवकों के बिना संभव नहीं है आज के सुशासन उधमी शासन उदारीकरण ,वैश्वीकरण , प्रतिस्पर्धात्मक बाजार उन्मुख शासन में प्रशिक्षण का महत्व बढ़ गया है अतः वर्तमान में सुशासन को स्मार्ट शासन के संदर्भ में वर्णित किया जाता है

S = Small (नौकरशाही का आकार कम करना)

M=A Moral (प्रशासन में प्रशासन में नैतिकता स्थापित करना)

A = Accountable (लोक सेवाओं में जवाबदेयता लाना)

R = Reliable (जनता में प्रशासन के प्रति विश्वास पैदा करना)

T = Transparent (सरकारी नीतियों कार्यों आदि में पारदर्शिता लाना)

भारत को शासन में सत्य निष्ठा विकसित करने पर ध्यान देना जिससे शासन व्यवस्था नैतिक बनेगी। अतः सुशासन राज्य ,समाज और संसाधनों का उचित प्रबंधन है यह सार्वजनिक क्षेत्र के प्रबंधन , विकास के लिए कानूनी ढांचे, जवाबदेही, पारदर्शिता, सूचना के मुक्त प्रवाह पर जोर देता है

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजस्थान सुजस
2. सुशासन– सुनील गुप्ता, व डॉ–कमल कुमार सिंह
3. जनपद स्तर पर सुशासन– डॉ– अभिशेक कुमार श्रीवास्तव
4. भारत में सुशासन चुनौतियॉ, वं समाधान–सूर्यभान प्रसाद
5. आम आदमी के लिये सुशासन–लवकेश चन्द्रा
6. भारतीय संविधान, राजव्यवस्था, लोक प्रसाशन एवं सुशासन – डॉ– मनीश रंजन

❖◆❖